बाइबल टीचर

वर्ष 18 | मई 2021 | अंक 6

सम्पादकीय

सच्चा और जीवता परमेश्वर

खुदा या परमेश्वर स्वर्ग में है। परमेश्वर आदि से ही है। उसे किसी ने नहीं बनाया है। जब इस संसार में कुछ नहीं था, तब भी परमेश्वर था। और मान लें कि अगर कुछ न भी होता तो भी परमेश्वर और उसकी शक्ति होती। स्वर्ग का परमेश्वर जीवित परमेश्वर है जिसका वर्णन सम्पूर्ण बाइबल में है। बाइबल बताती है कि भेदों का प्रकटकर्ता परमेश्वर स्वर्ग में है (रोमियों 1:20; दानिय्येल 2:28), आज बहुत से लोग यह नहीं मानते कि स्वर्ग में एक महान परमेश्वर है। ऐसे लोगों के विषय में बाइबल कहती है कि वे मूर्ख है क्योंकि सारी सृष्टि यह दिखाती है कि एक बड़ी शक्ति है जिसे हम परमेश्वर या खुदा कहते है। भजन संहिता के लेखक ने कहा था कि मूर्ख ने अपने मन में कहा है, कोई परमेश्वर है ही नहीं (भजन संहिता 14:4)।

अभी हाल ही में टी.वी. पर एक समाचार को बार-बार दिखाया जा रहा था जिसमें एक वैज्ञानिक ने जिसका नाम स्टीफन हाकिंस है, यह दावा किया है कि कोई परमेश्वर नहीं है। हमें यह सोचकर बड़ा आश्चर्य होता है कि इस व्यक्ति ने अपने मन में ऐसा विचार किया भी कैसे?

शायद यह वैज्ञानिक यह भी नहीं समझता था कि ''आकाश ईश्वर की महिमा का वर्णन कर रहा है; और आकाशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रकट कर रहा हैं दिन से दिन बातें करता है, और रात को रात ज्ञान सिखाती है। न तो कोई बोली है और न कोई भाषा जहां उनका शब्द सुनाई नहीं देता है। उनका स्वर सारी पृथ्वी पर गूंज गया है, और उनके वचन जगत के छोर तक पहुंच गए हैं। उन में उसने सूर्य के लिये एक मण्डप खड़ा किया है, जो दूल्हे के समान अपने महल से निकलता है। वह शूरवीर की नाईं अपनी दौड़-दौड़ को हर्षित होता हैं वह आकाश के एक छोर से निकलता है, और उसके दूसरी छोर तक चक्कर मारता है; और उसकी गर्मी सबको पहुंचती है'' (भजन संहिता 19:1-6)। एक साधारण व्यक्ति भी यह सब देख कर क्यों विश्वास नहीं करेगा कि परमेश्वर है?

महान परमेश्वर ने मनुष्य को रचा है। उसने अपना श्वास उसमें फूंका है तथा प्रत्येक मनुष्य में एक आत्मा है। जब तक हमारे शरीर के अन्दर आत्मा है, तब तक हम इस पृथ्वी पर जीवित है तथा शरीर के आत्मा से अलग हो जाने पर आत्मा परमेश्वर के पास लौट जाती है (सभापदेशक 12:7)। कइयों का यह विचार है कि

मनुष्य बन्दर से बना है और ऐसी बात सोचकर हमें हंसी आती है कि कुछ लोग ऐसा सोच भी कैसे सकते हैं? जबकि उन्हें स्वयं अपने आपको देखना चाहिए कि वे खुद बन्दर के जैसे नहीं लगते।

परमेश्वर के विषय में प्रेरित पौलुस ने अथेने नाम की जगह पर लोगों को वचन सुनाते हुए बताया था कि तुमने बहुत से देवी-देवताओं के विषय में सुना है परन्तु मैं तुम्हें ऐसे ईश्वर के विषय में बताना चाहता हूं जिसने पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं को बनाया है। वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता। न वह किसी वस्तु का प्रयोजन रखकर मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है, क्योंकि वह तो आप ही सबको जीवन और श्वास और सब कुछ देता हैं उसने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियां सारी पृथ्वी पर रहने के लिए बनाई हैं, और उनके ठहराए हुए समय और निवास की सिवानों को इसलिए बांधा है कि वे परमेश्वर को ढूंढ़े कदाचित उसे टटोलकर पा जाएं, तौभी वह हममें से किसी से दूर नहीं है। क्योंकि हम उसी में जीवित रहते और चलते-फिरते और स्थिर रहते हैं। सो परमेश्वर का वंश होकर हमें यह समझना उचित नहीं है कि ईश्वर सोने या रुपए या पत्थर के समान है, जो मनुष्य की कारीगरी और कल्पना से गढ़े हो (प्रेरितों 17:23-29)।

हमारा परमेश्वर जीवित तथा सारे जगत का स्वामी है। वह महान है (उत्पत्ति 17:1) स्र्वशक्तिमान है (प्रकाशितवाक्य 19:6) तथा अपनी इच्छा अनुसार इस जगत पर राज करता है। परमेश्वर की महानता इतनी बड़ी है कि हम अपने इंसानी दिमाग से उसके अस्तित्व को समझ ही नहीं सकते। प्रेरित पौलुस कहता है, आहा! परमेश्वर का धन और बुद्धि और ज्ञान क्या ही गंभीर है। उसके विचार कैसे अथाह, और उसके मार्ग कैसे अगम है (रोमियो 11:33)।

थिस्सलुनीके नामक स्थान पर जब पौलुस ने सच्चे जीवते परमेश्वर के विषय में बताया तो वे लोग मूरतों से परमेश्वर की ओर फिर गए ताकि जीवते और सच्चे परमेश्वर की सेवा करे। (1 थिस्सलुनीकियो 1:9)। उन लोगों ने ऐसा क्यों किया? क्योंकि वे मन से यह समझ गए थे कि एक सच्चा और जीवता परमेश्वर है। यिर्मयाह भविष्यवक्ता कहता है, परन्तु यहोवा वास्तव में परमेश्वर है, जीवित परमेश्वर और सदा का राजा वही है (यिर्मयाह 10:10)।

बाइबल हमें यह भी बताती है कि परमेश्वर अनन्त है। भजन का लिखने वाला कहता है कि यहोवा परमेश्वर सदैव सिंहासन पर विराजमान है (भजन संहिता 9:7)। हे प्रभु तू पीढ़ी से पीढ़ी तक हमारे लिये धाम बना है। इससे पहिले कि पहाड़ उत्पन्न, हुए, वा तू ने पृथ्वी और जगत की रचना की, वरन अनादिकाल से अनन्तकाल तक तू ही ईश्वर है (भजन संहिता 90:1-2)। सच्चा जीवता परमेश्वर आपके विषय में सब कुछ जानता है। हम उससे कुछ भी छिपा नहीं सकते।

दाऊद अपने भजन में कहता है, तू मेरा उठना-बैठना जानता है; और मेरे विचारों को दूर ही से समझ लेता है। मेरे चलने और लेटने की तू भली-भांति छानबीन करता है, और मेरे पूरे चाल-चलन का भेद जानता है। हे यहोवा, मेरे मुंह में ऐसी कोई बात नहीं जिसे तू पूरी रीति से न जानता हो। तू ने मुझे आगे-पीछे घेर

रखा है, और अपना हाथ मुझ पर रखे रहता है। यह ज्ञान मेरे लिये बहुत कठिन है; यह गंभीर और मेरी समझ से बाहर हैं, मैं तेरे आत्मा से भागकर किधर जाऊ? वा तेरे साम्हने से किधर भागूं? यदि मैं आकाश पर चढ़ूं, तो तू वहां है यदि मैं अपना बिछौना अधोलोक में बिछाऊं तो वहां भी तू है। (भजन संहिता 139:2-8)। आप परमेश्वर से बचकर भाग नहीं सकते। क्योंक ऐसा कोई गुप्त स्थान है ही नहीं जहां वह हमें देख न पाए (यिर्मयाह 23:23-24)। हमारा परमेश्वर, प्रभु महान और अति सामर्थी है, उसकी बुद्धि अपरम्पार है (भजन संहिता 146:5)।

क्या आप सच्चे जीवते परमेश्वर को मानते है? विश्वास बिना हम उसे प्रसन्न नहीं कर सकते (इब्रानियों 11:6)। क्या आपकी आशा उस महान परमेश्वर पर है जो आपको उद्धार दे सकता है? प्रेरित पौलुस कहता है, क्योंकि हम परिश्रम और यत्न इसीलिए करते हैं, कि हमारी आशा उस जीवते परमेश्वर पर है; जो सब मनुष्यों का और निज करके विश्वासियों का उद्धारकर्ता है। (1 तीमुथियुस 4:10)। यदि आप सच्चे जीवते परमेश्वर के साथ चलें तो शैतान आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकता। वह अय्यूब का भी कुछ नहीं बिगाड़ पाया था। वह हर परीक्षा में हमारी सहायता करेगा। हम पढ़ते हैं। प्ररितों कहता है, ''कि तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है, और परमेश्वर सच्चा है, वह तुम्हें सामर्थ से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन परीक्षा के साथ निकास भी करेगा; कि तुम सह सको'' (1 कुरिन्थियों 10:13)।

सच्चे जीवते परमेश्वर को हमारा ध्यान रहता हैं परन्तु क्या हम उससे वैसा ही प्रेम करते हैं जैसा वह चाहता है कि हम उससे करें? क्योंकि हमें यह बात पता होनी चाहिए कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं, अर्थात उन्हीं के लिए जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए है (रोमियों 8:28)।

नास्तिक लोग चाहे जितना भी चिल्ला कर बोलें कि कोई परमेश्वर नहीं हैं परन्तु वे यह प्रमाणित करने में असमर्थ हैं कि परमेश्वर नहीं है। परमेश्वर अनादि है। वह आदि से था, और अनन्तकाल तक रहेगा।

बाइबल परमेश्वर की प्रेरणा के द्वारा लिखा हुआ उसका वचन है (2 तीमुथियुस 3:16-17) जो हमें बताता है कि एक सच्चा जीवता परमेश्वर है। परमेश्वर ने जगत से और आप से ऐसा प्रेम रखा कि उसने आपके और मेरे पापों के लिए अपने पुत्र को क्रूस पर बलिदान होने दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए (यूहन्ना 3:16)। प्रभु हम सबके पापों के लिए क्रूस पर बलिदान हुआ (2 कुरिन्थियों 5:17)।

महान परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रकट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा (रोमियों 5:8)। प्रेमी परमेश्वर आपको पापों से उद्धार देना चाहता है। क्या आप उसके उद्धार को पाने के इच्छुक हैं? वह आपके लिए धीरज धरता है और नहीं चाहता है कि कोई नाश हो वरन चाहता है कि सब को मन फिराव का अवसर मिले (2 पतरस 3:9)। इसी परमेश्वर ने अपनी एक कलीसिया या मण्डली बनाई है, जो विश्वव्यापी है तथा उसने मनुष्य

के लिए एक उद्धार की योजना को दिया है। यदि कोई उसके उद्धार को प्राप्त करना चाहे तो उसे चाहिए कि उसमें विश्वास करे और उसके पुत्र यीशु में विश्वास करके अपने पापों से मन फिराकर, बपतिस्मा ले (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38; गलातियों 3:26-27 रोमियों 6:3-4)। भजन का लिखने वाला कहता है, ''क्या ही धन्य है वह जाति जिसका परमेश्वर यहोवा है, और वह समाज जिसे उसने अपना निज भाग होने के लिए चुन लिया हो'' (भजन 33:12)।

जब कोई एक मसीही बन जाता है

सनी डेविड

आज मैं आप को इस बारे में बताना चाहता हूं कि जब कोई व्यक्ति एक मसीही अर्थात मसीह यीशु का एक अनुयायी बना जाता है; तब क्या होता है। अब इस बात पर ध्यान दें, कि मैं यह नहीं कह रहा हूं, कि जब कोई एक मसीही बनाया जाता है, परन्तु मैं यह कह रहा हूं कि जब कोई व्यक्ति एक मसीही बन जाता है। क्योंकि, वास्तव में किसी भी इंसान को एक मसीही बनाया नहीं जा सकता- पर हर एक इंसान स्वयं अपनी ही इच्छा से अपना मन फिराकर संसार की सब बुरी बातों को छोड़कर और अंधकारपूर्ण अज्ञानता की सभी बातों से अपना मन फिराकर, परमेश्वर के मार्ग पर चलने के लिये एक मसीही बनता है। प्रभु यीशु मसीह ने कहा था, कि मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं, और बिना मेरे द्वारा कोई परमेश्वर के पास नहीं पहुंच सकता। (यूहन्ना 14:6) और यही वह सच्चाई है जिसको समझकर एक इंसान स्वयं अपनी ही इच्छा से एक मसीही बनना चाहता है। पर क्यों मसीह यीशु ने यह कहा था, कि मार्ग पर सच्चाई और जीवन मैं ही हूं और बिना मेरे द्वारा कोई परमेश्वर के पास नहीं पहुंच सकता?

अब परमेश्वर के पास तो सभी लोग पहुंचना चाहते हैं। क्योंकि सभी लोग यह जानते हैं कि यह संसार हमारा सदा का घर नहीं है। हम सब को एक न एक दिन यहां से जाना हैं और सभी परमेश्वर के पास ही जाना चाहते हैं। क्योंकि यदि कोई परमेश्वर के पास नहीं जाएगा तो वह नरक में जाएगा। और नरक में कोई भी नहीं जाना चाहता। लेकिन परमेश्वर के पास जाने का मार्ग कौन जानता है? किस रास्ते पर चलकर हम परमेश्वर के पास पहुंच सकते हैं? मार्ग मसीह यीशु ने कहा था, मैं हूं? क्योंकि वह अर्थात यीशु मसीह, परमेश्वर के पास से आया था। वह परमेश्वर का वचन था। वह परमेश्वर था। वह स्वयं स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आया था। और उसने जमीन पर एक मनुष्य के रूप में आकार अपना बलिदान देकर सारी मानवता के पापों का प्रायश्चित किया था। और इसीलिए उसने यह कहा था, कि मार्ग मैं हूं और मेरे द्वारा हर एक इंसान मसीह ने कहा था, परमेश्वर के पास पहुंच

सकता है। क्योंकि वह सारे जगत के पापों का प्रायश्चित है।

परमेश्वर के स्वर्ग में जाने से मनुष्य को केवल एक ही वस्तु रोकती है। और वह वस्तु है पाप, और कोई भी मनुष्य संसार में ऐसा नहीं है जिसने कभी कोई पाप न किया हो। सबने पाप किया है, कहती है बाइबल (रोमियों 3:23)। पर मनुष्य अपने पापों से मुक्ति अपने आप को कैसे दिला सकता है? मनुष्य पापों से छुटकारा कैसे पा सकता है? उसे अपने पापों की क्षमा कैसे मिल सकती है, यदि किसी की मृत्यु हो जाए, तो वह पाप नहीं कर सकता; क्योंकि एक मरा हुआ इंसान पाप नहीं कर सकता। अगर कोई अपने आप को एक कमरे में बंद कर ले और साधना तथा पूजा-पाठ करके अच्छे विचारों पर मन लगाने लगे, तो भी उन सब पापों से उसे क्षमा कैसे मिलेगी जिन्हें उसने कमरे में बंद होने से पहले किया था? सो सच्चाई तो यह है, कि हर एक इंसान को पापों से मुक्ति पाने और पापों की क्षमा पाने की आवश्यकता है। पर कैसे? क्या मनुष्य के पास कोई ऐसी वस्तु है जिसे वह परमेश्वर को अपने पापों की क्षमा के बदले में या अपने पापों से मुक्ति पाने के बदले में दे सकता है? वास्तव में बात तो यह है, कि मनुष्य के पास अपना कुछ भी नहीं है। क्योंकि पृथ्वी और आकाश में जो कुछ भी है, वह सब परमेश्वर का ही है। सब कुछ परमेश्वर ने ही बनाया है। सो हम, अपने पापों के छुटकारे के लिये, और अपने पापों की क्षमा पाने के लिये परमेश्वर को कुछ भी नहीं दे सकते। केवल परमेश्वर ही अपने अनुग्रह के द्वारा पाप से हमारा उद्धार कर सकता है, या हमें हमारे पापों से मुक्ति, और हमारे पापों की क्षमा दे सकता है। और परमेश्वर की पुस्तक बाइबल में लिखा है, कि यीशु मसीह ने परमेश्वर के अनुग्रह से हर एक इंसान के बदले में मृत्यु का स्वाद चखा था (इब्रानियों 2:9)। अर्थात हमारे प्रति परमेश्वर के अनुग्रह और प्रेम के कारण वह हमारे पापों के बदले में क्रूस के ऊपर मारा गया था। परमेश्वर ने उसे हमारे पापों के लिये क्रूस के ऊपर दंडित किया था। वह परमेश्वर की ओर से हमारे पापों का प्रायश्चित है। और यही कारण है, कि क्यों मसीह ने ऐसा कहा था, कि बिना मेरे द्वारा कोई परमेश्वर के पास नहीं पहुंच सकता, क्योंकि मार्ग, और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं।

पर मसीह यीशु के पास मनुष्य कैसे आता है? कैसे वह मसीह का एक अनुयायी बनता है? बाइबल में लिखा है, कि हर एक व्यक्ति जो मसीह के इस सुसमाचार को सुनता है, कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है, जो स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आया था। और जो मानवता के पापों का प्रायिश्चत करने को क्रूस के ऊपर परमेश्वर की इच्छा से बलिदान हुआ था। जब वह इस सुसमाचार में विश्वास करता है; मसीह में विश्वास लाता है; तो उसे प्रत्येक पाप और अज्ञानता के कामों से अपना मन फिराना चाहिए, और फिर मसीह की आज्ञा मानकर, उसके अधिकार से अपने पापों की क्षमा के लिये जल के भीतर गाड़े जाकर बपतिस्मा लेना चाहिए। और इस प्रकार, पाप के जीवन के लिये मरके, और जल की कब्र के भीतर अपने पुराने इंसान को गाड़कर और उसमें से बाहर आकर, मनुष्य एक नया इंसान बन जाता है, इस प्रकार उसका एक नया आत्मिक जन्म होता है, और वह मसीह का

एक अनुयायी बन जाता है। अर्थात अब वह अपना जीवन यीशु मसीह के आदर्शों पर चलकर व्यतीत करता है। और इसीलिये वह व्यक्ति अब एक मसीही कहलाता है।

पर एक मसीही बनने से उस व्यक्ति को क्या प्राप्त हुआ? क्यों वह सब कुछ छोड़कर मसीह का अनुयायी बना? क्यों मैं आपको एक मसीही बनने के बारे में बता रहा हूं? और क्यों मैं स्वयं भी एक मसीही हूं? इसलिये क्योंकि एक मसीही वह व्यक्ति है, जो यह जानता है, कि यीशु मसीह के क्रूस पर बलिदान होने के कारण, और उसमें विश्वास लाकर उसके सुसमाचार को मानने के कारण मुझे मेरे पापों से मुक्ति और क्षमा मिली है। और इसलिये अब मैं परमेश्वर के पास स्वर्ग में जाऊंगा। यह वह सच्चा आनन्द है; यह वह सच्ची शांति है; और यही वह सच्ची आशा है जिसकी आवश्यकता संसार में हर एक इंसान को हैं क्योंकि चाहे कोई वयक्ति पृथ्वी पर संसार की हर एक वस्तु और हर एक खुशी को प्राप्त कर ले, परन्तु अपने पापों से मुक्ति और पाप की क्षमा प्राप्त किए बिना ही इस संसार से चला जाए, तो उस इंसान की क्या आशा होगी? पृथ्वी पर वह एक बड़ा शक्तिशाली मनुष्य हो सकता है; आदरणिय और सम्मानित मनुष्य हो सकता है; वह एक बड़े प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी हो सकता है। वह धनी और मान-सम्मान वाला व्यक्ति हो सकता हैं पर जिस क्षण वह अपने प्राण त्याग देता है, तो इन में से कोई भी वस्तु उसके काम की नहीं रहती। इसीलिये प्रभु यीशु ने यह सिखाया था, कि यदि कोई मनुष्य सारे जगत को भी क्यों न प्राप्त कर ले पर अन्त में अपनी अमर आत्मा को खो दे, तो उसे क्या लाभ होगा? (मत्ती 16:26)।

इस कारण, पृथ्वी पर यदि कोई वस्तु सबसे अधिक मूल्यवान वस्तु है, तो वह वस्तु मनुष्य की आत्मा है। क्योंकि, जब कि सब कुछ नाशमान है; मनुष्य की आत्मा ही केवल अमर है। क्योंकि मनुष्य की आत्मा परमेश्वर का स्वरूप है। क्योंकि आरंभ में परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप पर बनाया था। और न केवल परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप पर ही बनाया था, पर बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी समानता पर भी बनाया था। अर्थात आरंभ में मनुष्य परमेश्वर के ही समान शुद्ध और पवित्र था, यानि उसके भीतर पाप नहीं था। पर पाप करके मनुष्य ने अपने आप को अशुद्ध और अपवित्र बना लिया। और इस प्रकार अपने आपको परमेश्वर से अलग कर लिया। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उसने स्वर्ग से अपने वचन को एक मनुष्य बनाकर पृथ्वी पर भेज दिया। और उसे हमारे पापों का दण्ड देकर, हमें पाप से मुक्ति देकर अपने पास आने का एक मार्ग दे दिया।

परन्तु परमेश्वर ने जो करना था वह उसने कर दिया है। पर अब वह कर्तव्य हमारा है, कि हम उसकी सुनें और उसकी बात मानें।

अर्थात उसके सुसमाचार को मानें और उसके योग्य जीवन बिताएं।

कौन-सी कलीसिया, कौन-सा बपतिस्मा तथा कौन-सी आराधना

जे.सी. चोट

आज संसार में बहुत सारी कलीसियाएं है परन्तु बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर केवल अपनी एक कलीसिया को मान्यता देता है (इफिसियों 4:4; कुलुस्सियों 1:18)। यह कलीसिया कौन-सी है?

आइए देखें-

1. यीशु ने इसे बनाया था (मत्ती 16:18)।
2. इसका आरंभ यरूशलेम में हुआ था (लूका 24:47; प्रेरितों 2)।
3. इसकी स्थापना 33 ईस्वी सन में हुई थी।
4. यह कलीसिया यीशु का नाम अपने ऊपर रखती थी (रोमियों 16:16; 1 कुरिन्थियों 12:27; इफिसियों 1:22, 23)।
5. प्रभु यीशु इसका सिर है (कुलुस्सियों 1:18)।
6. यीशु ने इस कलीसिया को अपने लहू से मोल लिया है (प्रेरितों 20:28)।
7. यीशु ने इसके लिए अपने प्राण को दे दिया (इफिसियों 5:25)।
8. यीशु इसका उद्धारकर्ता है (इफिसियों 5:23)।
9. यीशु एक चट्आन की तरह है, जिसके ऊपर यह कलीसिया बनी है (मत्ती 16:18; 1 कुरिन्थियों 3:11)।
10. इसके सदस्यों को केवल मसीही कहा जाता है (प्रेरितों 4:12; प्रेरितों 11:26)।

अब हम यह देखना चाहते हैं कि परमेश्वर का वचन आराधना के विषय में क्या कहता है? तमाम लोग जो बाइबल में विश्वास करते हैं, उन सबको बाइबल के अनुसार आराधना करनी चाहिए। बाइबल हमें अनजाने में की गई आराधना के विषय में बताती है (प्रेरितों 17:23)। व्यर्थ उपासना के विषय में भी बाइबल हमें बताती है (मत्ती 15:9) तथा सच्ची उपासना के विषय में भी हम पढ़ते हैं, जो नये नियम के अनुसार की जाती है (यूहन्ना 4:24)। वचन में हम पढ़ते हैं कि नये नियम की उपासना में निम्नलिखित बातों को किया जाता है।

1. मसीही लोग अध्ययन करने के लिए इक्ट्ठे होते हैं (प्रेरितों 17:11:2 तीमुथियुस 2:15)।
2. हम प्रार्थना करते है (प्रेरितों 2:48; लूका 18:1, 1 थिस्सलुनीकियों 5:17)।
3. भजन और गीत गाए जाते हैं (कोई साज इत्यादि नहीं बजाया जाता) (इफिसियों 5:19; कुलुस्सियों 3:16)।
4. मसीही लोग प्रभु भोज लेने के लिए इकट्ठे होते हैं (मत्ती 26:26-28; 1 कुरिन्थियों 11; प्रेरितों 20:7)।
5. मसीही लोग परमेश्वर के कार्य के लिए चंदा देते हैं। (1 कुरिन्थियों 16:12;

2 कुरिन्थियों 9:7)।

मसीही लोगों को आराधना करना नहीं भूलना चाहिए (इब्रानियों 10:25), प्रत्येक सप्ताह के पहले दिन अर्थात रविवार को आराधना करना नहीं भूलना चाहिए। जब हम बाइबल के अनुसार आराधना करेंगे, तब परमेश्वर इससे प्रसन्न होगा।

1. यह यीशु की आत्मिक देह है (इफिसियों 1:22, 23)। यह देह उसकी कलीसिया है (इफिसियों 4:4)।
2. जो लोग सुसमाचार की आज्ञाओं को मानते हैं, उन्हें प्रभु द्वारा इसमें मिला दिया जाता है (प्रेरितों 2:47)।
3. यीशु अपनी इस कलीसिया के लिए एक दिन वापस आएगा।

क्या आप इस कलीसिया के सदस्य हैं?

इसके विषय में जांच-पड़ताल कीजिए तथा उस सच्ची कलीसिया के सदस्य बनें, जो बाइबल के बपतिस्मे के विषय में देखना चाहते हैं। बाइबल परमेश्वर का वचन अपने पूरे अधिकार से हमें बपतिस्मे के विषय में बताता है। इसलिए इसके विषय में जानने के लिए हमें बाइबल के पास जाना चाहिए। आइए इस विषय की वास्तविकता को बाइबल से देखें-

1. केवल एक बपतिस्मा है (इफिसियों 4:5)। इस बात को 64 ईस्वी में लिखा गया था।
2. इस बपतिस्मे को बाइबल में गाड़ा जाना कहा गया है (कुलुस्सियों 2:12; रोमियों 6:3,4)। यह यूनानी भाषा के शब्द बैपटिज़ो से लिया गया है और इसका अर्थ गाड़ा जाना होता है। कहीं भी इसे सिर के ऊपर छिड़काव करना नहीं कहा गया।
3. बपतिस्मा जल में गाड़े जाना है (प्रेरितों 8:26-39)।
4. यह सुसमाचार की आज्ञा है (मरकुस 16:15, 16; प्रेरितों 10:48)।
5. बपतिस्मा यीशु के अधिकार से पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में दिया जाता है (मत्ती 28:19)।
6. बपतिस्मा हमें बचाता है अर्थात हमारे पापों से हमें छुटकारा देता है (1 पतरस 3:21)
7. यह पापों की क्षमा के लिए लिया जाता है (प्रेरितों 2:38)।
8. यह हमारे पापों को धो देता है (प्रेरितों 22:16)।
9. यह हमें मसीही में मिलाता है (रोमियों 6:3, 4; गलातियों 3:26-27)।
10. यह हमें कलीसिया में मिलाता है (1 कुरिन्थियों 12:13)।

बपतिस्मा हमें बचाता है (1 पतरस 3:21)। यह हमें तब बचाता है जब हमारे अन्दर प्रभु में विश्वास होता है (इब्रानियों 11:6)। हमें अपने पापों से मन फिराना चाहिए (प्रेरितों 17:30)। यीशु का मुंह से अंगीकार करना है (मत्ती 10:32)। जैसे यीशु ने परमेश्वर की आज्ञा मानी थी, वैसे ही हमें भी परमेश्वर की आज्ञा माननी चाहिए। (इब्रानियों 5:8, 9)।

प्रभु भोज

ओवन डी. आल्ब्रट

पौलुस की शिक्षा से कुरिन्थुस में प्रभु-भोज के संबंध में उठी समस्याएं सुलझ जाती यदि वे उसके निर्देश को सही समझकर सही कदम उठाते।

(1) हम "अनुचित ढंग" से खाएं या पिएं नहीं (आयत 27)। पौलुस की चिंता खाने वालों की अयोग्यता नहीं बल्कि खाने के ढंग के विषय में थी। यीशु की देह और लहू के योग्य कोई नहीं है। खाने वालों को उस समय के महत्व को समझते हुए भक्ति और आदर से खाना आवश्यक है। जैसाकि एक बाइबल के जानकार ने संक्षेप में कहा है, इसे यह पुष्टि करने के लिए अपनी जांच करके ही उनकी समझ, व्यवहार और आचरण उस सब में जो मसीह की देह और लहू बताते हैं, कार्य और समझ दोनों के शब्दों में सच्चाई से भाग लेकर हो सकता है।

(2) हम यीशु की देह और लहू के दोषी न हो। डेविड प्रायर ने अवलोकन किया।

आवश्यक रूप में आप मसीह का लहू बहाने के दोषी बन जाते है, अर्थात आप अपने आपको उनकी संगति में नहीं रखते जो उसके दुख के लाभों में सहभागी है, बल्कि उनकी संगति में रखते है जो उसे क्रूस पर चढ़ाने के जिम्मेदार है।

रिचर्ड बी. हेयस की टिप्पणी इस मामले को बढ़ा चढ़ा कर कह सकती है, पर यह ध्यान देने के योग्य है :

ये इब्रानियों की पत्री में नष्ट होने वाले मसीही लोगों के सम्मान हैं जिनकी पाप में बने रहने के कारण निंदा की गई जो "परमेश्वर के पुत्र को फिर क्रूस पर चढ़ाते हैं और प्रगट में उस पर कलंक लगाते है।" (इब्रा. 6:6)।

किसी भी व्याख्या में स्वयं यीशु पर जोर देने से बढ़कर लहू और देह पर अधिक जोर नहीं दिया जाना चाहिए। परन्तु इन प्रतीकों के लिए सम्मान की कमी एक व्यक्ति को उस यीशु को समझने में नाकाम कर सकती है जिसका वे प्रतिनिधित्व करते हैं। यह सोचना शायद सबसे बढ़िया है कि अपमान प्रभु की देह और लहू का उतना नहीं जितना स्वयं प्रभु का है।

(3) हमें भोज में भाग लेने के अपने उद्देश्यों और महत्वों को सुनिश्चित करने के लिए अपनी जांच करने में सावधान रहना आवश्यक है (आयतें 28, 31, 32)। पौलुस यह सुझाव नहीं दे रहा था कि भाग लेने वाले यह तय करने के लिए कि वे योग्य हैं या नहीं? अपने जीवनों में पाप के लिए अपने मनों को जांचे। इसके विपरीत उन्हें यह सुनिश्चित करने के लिए एक भोज के संबंध में उनका व्यवहार और समझ सही है या नहीं अपनी जांच करनी आवश्यक थी। यह तय करने के लिए एक व्यक्ति भोज के योग्य है या नहीं।

अपने आप को जांचने का अर्थ अपने मन के व्यवहार और अपने बाहरी आचरण और भोज के वास्तविक स्वभाव और उद्देश्य की अपनी समझ की परख करना आवश्यक है। अपनी जांच करके विश्वासी इस भोज के महत्व को जो मसीह

की मृत्यु को याद दिलाता है, न समझकर अपने ऊपर दण्ड लाने के लिए खाने और पीने के विरूद्ध अपना बचाव करता है।

(4) हमें खाते समय पहचानने के लिए समय देना आवश्यक है (आयतें 29, 30)। पहचानने का अर्थ समझना है। पहचानने का इस्तेमाल परख करने के अर्थ में जैसे प्रभु भोज और सामान्य या आम भोजन में अन्तर करने के लिए किया गया है। हमें अपनी जांच करनी चाहिए (आयत 31) ताकि हम प्रभु भोज में इस प्रकार भाग ले सके जिससे यीशु प्रसन्न हो। इसी शब्द का एक रूप का इस्तेमाल आयत 31 में आयत 29 से अलग संदर्भ में किया गया है, इस कारण कइयों ने इसका आयत 31 में अलग अर्थ चाहा है। आवश्यक नहीं है कि यह सही हो।

आयत 29 में इस्तेमाल हुए क्रिया के उसी अनुवाद को बनाए रखना थोड़ा अटपटा लगता है, पर प्रत्येक संदर्भ में महत्व सचमुच में वही हैं पूरी तरह होने वाले ऐसे न्याय के लिए जांच की वस्तुओं का उपयुक्त महत्व है।

आयत 31 में परमेश्वर का न्याय यह तय करने के लिए नहीं है कि इसमें भाग लेने वाले लोगों को अनन्त दण्ड मिलेगा क्योंकि वे निर्बल, रोगी और सोए हुए हैं। इसके विपरीत परमेश्वर दण्ड इसलिए देता है ताकि वह अनुचित व्यवहार को सुधारने के लिए अनुशासन ला सके। एक बाइबल के ज्ञानी ने कहा है–

पौलुस के कहने का अर्थ यह नहीं है कि रोगी या मरे हुओं को अनन्त हानि का डर दिया गया है। बल्कि ऐसा दण्ड ईश्वरीय अनुशासन के रूप में समझा जाए जिसमें एक प्रेमी पिता अपने बच्चों को सुधार रहा हैं ऐसे अनुशासन का उद्देश्य है अंतिम न्याय के समय हम संसार के साथ दण्ड न पाए।

प्रभु के अनुशासन के संबंध में यदि यह निष्कर्ष सही है तो पौलुस आयत 30 में उन लोगों की बात कर रहा होगा जो आत्मिक रूप में सोए हुए थे, न कि उनकी जो शारीरिक रूप में मरे हुए थे। क्या परमेश्वर मरे हुओं पर अनुशासन इसलिए लाता है कि वे अपने जीवनों को सुधार लें? क्या वे जीवन के अपने धन या भोज के गलत ढंग से खाने में सुधार कर सकते हैं?

यदि हम अपनी जांच करते हैं और भोज को सही ढंग से देखते हैं तो हमें आत्मिक निर्बलता, बिमारी और नींद की अफसोसजनक स्थिति में जगाने के लिए प्रभु के अनुशासन की आवश्यकता नहीं होगी। अनुचित ढंग से भोज को खाने वाले लोग आत्मिक रूप में आलसी और निक्कमे हो सकते हैं; इसलिए उन्हें प्रभु के दण्ड और अनुशासन की आवश्यकता है (1 कुरिन्थियों 11:31, 32)।

(5) हमें देह पर ध्यान लगाना हैं और देह के अर्थ के संबंध में तीन संभावनाएं दी जाती है। पहला देह कलीसिया हो सकती है। यदि देह का अर्थ भोज को मनाने के लिए इकट्ठा हुई कलीसिया के लोग हैं, तो दण्ड इसलिए आता है क्योंकि वे इस संगति के ईश्वरीय स्वभाव में अन्तर नहीं करते। दूसरा यह प्रभु भोज के संबंध में हो सकता है, जिसमें तुम्हारे लिए यीशु की मृत्यु में भाग लेने वालों के रूप में भाग लेना। तीसरा, इसका अर्थ यीशु की शारीरिक देह हो सकता है। कहीं और चाहे मसीह की देह कलीसिया को कहा गया है, पर इस पृष्ठभूमि में देह का इस्तेमाल कलीसिया के लिए नहीं है (11:24, 27)। यह सच है कि भोज में भाग लेने वालों

से कलीसिया के प्रति उचित व्यवहार की मांग की जाती है, पर यहां पर देह का अर्थ वह देह है जो यीशु ने क्रूस पर बलिदान की थी।

कुछ लोग यह दावा करते हैं कि देह विश्वासियों की देह है इस बात से संतुष्ट हैं कि यदि देह यीशु की देह के प्रतीक के रूप में भोज की बात करती हैं, तो लहू की बात क्यों नहीं? ऐसा ही सवाल पूछा जा सकता है कि 1 कुरिन्थियों 10:21 में पहले मेज के संबंध में केवल कटोरे की बात क्यों हुई थी, रोटी की क्यों नहीं?

अगली टिप्पणियों में प्रभु की देह के पहचानने की नाकामी के विचार को बड़े बेहतरीन ढंग से बताती प्रतीत होती है–

सबसे संभव व्याख्या लगती है यदि वह (भाग लेने वाला) यह समझता है नहीं है कि रोटी और दाखरस हमारे लिए प्रभु के स्व–बलिदाल को दर्शाते है।

प्रतीकों का अपमान करने का अर्थ उसका अपमान करना है जिसका वे प्रतिनिधित्व करते है; और कुरिन्थियों की तरह रोटी और दाखरस का इस्तेमाल करना मसीह की मृत्यु की यादगारों के साथ व्यवहार करना है, और इसलिए जो वे करते हैं वे अपमान के साथ है।

थोड़ा सा अलग ढंग से फिशर इस व्याख्या से सहमत है :

पाप प्रभु–भोज और सामान्य भोजन के अन्तर न कर पाने का नहीं बल्कि उन तत्वों के प्रभु–भोज के प्रतीक को न देख पाना है। रोटी देह अर्थात यीशु के जीवन को दर्शाती है। यदि कोई बिना स्मरण किए उसे खाता है तो उसने देह को पहचाने बिना खाया है, पौलुस ने इस बात में आत्मिक अर्थ को अनुभव किए बिना कलीसिया के संस्कार में लगे होना पापपूर्ण माना है।

जो लोग रोटी और कटोरे के यीशु के बलिदान किए गए देह और लहू को नहीं देखते, जिसे वे दर्शाते हैं जिसका वे प्रतीक हैं, वे इसमें भाग लेकर अपने ऊपर दण्ड लाते हैं। (1 कुरिन्थियों 11:29)। दण्ड का अर्थ निंदा भी हो सकता है (मत्ती 23:14; लूका 23:40; 1 तीमुथियुस 3:6; यहूदा 4)। दण्ड से बचने के लिए भाग लेने वालों को अपने अन्दर झांकना चाहिए। हमें भोज को खाते समय उपयुक्त भक्ति को दिखाना आवश्यक हैं।

घर में आनन्द (गलातियों 5:22, 23)

कोय रोपर

इस शृंखला में हम इस बात पर चर्चा करते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि जहां आत्मा का फल पाया जाता है, उस घर को सफल कैसे बनाएं। पौलुस ने कहा, पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम है; ऐसे–ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं। (गलातियों 5:22, 23)।

इस पाठ का फोकस आत्मा के दूसरे गुण अर्थात आनन्द पर है। सफल घर की परिभाषा देते हुए हमने अन्य बातों के साथ यह कहा था कि यह खुशहाल है। यह विशेषता उस आवश्यकता के साथ थी कि आनन्द से भरा घर खुशहाल है। एक

छत के नीचे रहने पर किसी को दुख और नाराजगी के अलावा और कुछ न देने वाला घर सफल नहीं है।

आनन्द कहां से मिलता है? हमें लग सकता है कि आनन्द सांसारिक समृद्धि से, धन या सम्पत्ति जमा करने से मिलता है। वास्तव में कुछ सीमा तक आर्थिक सुरक्षा और सुविधा से जीवन और सुखद हो सकता है। निर्धनता कोई खूबी नहीं है। परन्तु जिन लोगों के पास अधिक धन होता है, आमतौर पर उनके घर अधिक दुखी होते हैं, जबकि जिनके पास धन नहीं होता उनके घर बहुत खुशहाल होते हैं। इसलिए घर में आनन्द या खुशी धन से नहीं आती और न ही सम्पत्ति का होना इसकी गारंटी है।

आनन्द धर्मी ठहराए जाने से मिलता है। घर में खुशी हो सकती है यदि घर को बनाने वाले लोग मसीह के द्वारा उद्धार पाए हुए, या धर्मी ठहराए हुए हैं। हम उस अवधारणा को नये नियम में पाए जाने आनन्द के स्वभाव पर चर्चा करके दिखाना चाहते हैं और फिर हम देखेंगे कि हमारे अपने घरों में ऐसा आनन्द होने के लिए क्या आवश्यक है।

आनन्द का स्वभाव

सच्चा आनन्द धर्मी ठहराए जाने से मिलने की बात नये नियम में शामिल आनन्द और घर में शामिल आनन्द के ध्यान से होती है।

आनन्द का महत्व

नया नियम आनन्द से भरा है। विलियम बार्कले ने कहा था कि नया नियम तो आनन्द की पुस्तक है। उसने आगे कहा, नये नियम में क्रिया शब्द जिसका अर्थ आनन्द करना है, बहत्तर बार आया है और जिसका अर्थ आनन्द है, साठ बार आता है।

नया नियम हर जगह इस बात का संकेत देता है कि परमेश्वर चाहता है हम आनन्द का अनुभव करें। यीशु का जन्म बड़े आनन्द का सुसमाचार था (लूका 2:10)। यीशु ने कहा मैंने ये बातें तुम से इसलिए कहीं है, कि मेरा आनन्द तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए। (यूहन्ना 15:11)। जी उठने की घोषणा हो जाने के बाद चेले बड़े आनन्द के साथ (मत्ती 28:8) चले गए थे। नये नियम के लेखक अपने पाठकों को सलाम करने या अलविदा कहने के समय आमतौर पर शब्द के एक रूप का इस्तेमाल करते थे (देखें 2 कुरिन्थियों 13:11 और याकूब 1:2)।

आनन्द क्या नहीं है

नये नियम में दिखाए गए आनन्द का हर समय अच्छा अहसास या उल्लास नहीं हो सकता। क्यों?

1. फिलिप्पियों 4:4 की बात के कारण: प्रभु में सदा आनन्दित रहो; मैं फिर कहता हूं आनन्दित रहो। (फिलिप्पियों 3:1 और 1 थिस्सलुनीकियों 5:16 भी देखें) इस आयत की दो बातों से संकेत मिलता है कि आनन्द केवल अच्छा अहसास ही नहीं है। एक तो यह है कि यह सदा शब्द का इस्तेमाल करता है। कोई व्यक्ति सदा

अच्छा महसूस नहीं कर सकता। दूसरा यह है कि यह आयत वास्तव में हमें आनन्द करने की आज्ञा देती है। भावना या अहसास के लिए, प्रसन्नता या खुश रहने की आज्ञा नहीं दी जा सकती। हर समय प्रसन्न रहने की आज्ञा को कोई भी व्यक्ति कैसे मान सकता है?

2. आनन्द से जुड़ी बातों के कारण। आनन्द का संबंध धीरज और सहनशीलता से है। कुलुस्सियों 1:11, 12 में पौलुस ने कहा कि उसने कुलुस्सियों के लिए प्रार्थना की कि वे सब प्रकार की सामर्थ से बलवन्त होते जाए, कि आनन्द के साथ हर प्रकार से धीरज और सहनशीलता दिखा सके, और पिता का धन्यवाद करते रहे, जिसने हमें इस योग्य बनाना है कि ज्योतिमें पवित्र लोगों के साथ मिरास में सहभागी हो। आनन्द का अर्थ यह नहीं है कि कठिन परिस्थितियों नहीं होगी, बल्कि यह तो धीरज और सहनशीलता के उन गुणों से जुड़ा है, जो ऐसी परिस्थितियों में सहन करने के लिए आवश्यक होती है।

इसके अलावा आनन्द पवित्र लोगों की अच्छी खबर मिलने से मिलता हैं जब हम साथी मसीही लोगों के बारे में अच्छी बातें सुनते हैं तो आनन्दित होते हैं। यूहन्ना ने संकेत दिया कि वह उनके साथ होने का इच्छुक था, जिन्हें उसने इसलिए लिखा कि उनका आनन्द पूरा हो (2 यूहन्ना 12)। 12 कुरिन्थियों 7:6, 7, 13 में पौलुस ने कहा कि वह आनन्दित है क्योंकि उसे कुरिन्थियों के मन फिराव और जोश का पता चलता है। फिलिप्पियों को लिखते हुए उसने कहा कि वह प्रभु में बहुत आनन्दित है क्योंकि अब वे उसके काम में उसके समर्थन के लिए उसकी सहायता कर सकते थे (फिलिप्पियों 4:10; फिलेमोन 7 भी देखें)।

इसके अलावा सच्चा आनन्द अनुशासन और परीक्षा के साथ भी जुड़ा है। याकूब ने लिखा था ''हे मेरे भाईयों जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो (याकूब 1:2)। आरंभिक मसीही जब सताए जाते थे तो वे सताए जाने के कारण आनन्दित होते थे'' (प्रेरितों 5:41; 2 कुरिन्थियों 6:10; 1 पतरस 4:13 भी देखें)।

3. पौलुस के व्यवहार के कारण फिलिप्पियों के नाम लिखने के समय वह जेल में था, संभवतया मृत्यु दण्ड पाने को था (फिलिप्पियों 1:20), तौभी फिलिप्पयों की पुस्तक आनन्द की पत्री है। इसी पुस्तक में सदा आनन्दित रहो लिखने के समय पौलुस यकीनन यह नहीं कह रहा था कि मसीही लोगों को बेपरवाह, उदासीन किस्म का आनन्द हर समय सुख के आभास वाला आनन्द होना चाहिए।

आनन्द क्या है

आनन्द यदि केवल खुशी का अहसास या अच्छी भावना नहीं है तो फिर बाइबल का आनन्द क्या है? नये नियम में, आनन्द का संबंध आत्मिक मूल्यों से है।

1. मसीह के साथ जोड़ना उन पण्डितों ने जब तारे को देखा जो उन्हें यीशु तक ले गया तो वे आनन्दित हुए (मत्ती 2:10)। चेलों ने जब जी उठे प्रभु को देखा

तो वे आनन्दित हुए (यूहन्ना 20:20 लूका 24:52)। जक्कई ने आनन्द से यीशु का स्वागत किया (लूका 19:6)।

2. मसीही बनना, या उद्धार पाए हुए होना। कूश देश का मंत्री बपतिस्मा लेने के बाद आनन्द करता हुआ अपने मार्ग पर चला गया (प्रेरितों 8:39)। थिस्सलुनीके के लोगों ने बड़े क्लेश में पवित्र आत्मा के आनन्द के साथ, वचन को माना तथा वे मसीही बन गए थे। (1 थिस्सलुनीकियों 1:6)।

3. दूसरों के उद्धार की खबर सुनना। इसके अलावा नये नियम के समयों में जब मसीही लोगों को पता चलता था कि लोगों ने उद्धार पाया है या और चेले भी विश्वासी हैं तो वे आनन्दित होते थे। खोए हुओं के उद्धार पाने पर परमेश्वर आनन्दित होता है (लूका 15)। इस बात से कि अन्य जातियों ने मन बदला है, यहूदी विश्वासी बहुत आनन्दित हुए (प्रेरितों 15:3)। पौलुस कुलुस्से के लोगों के धीरज के कारण (कुलुस्सियों 2:5) और थिस्सलुनीके के विश्वास और प्रेम के कारण (1 थिस्सलुनीकियों 3:6-9)। आनन्दित था। मसीही लोगों को सच्चाई में चलते देख यूहन्ना आनन्दित हुआ (2 यूहन्ना 4)।

फिर से, हम पौलुस यानी आनन्द के व्यक्ति के बारे में सोच सकते हैं, जो फिलिप्पी की जेल में भी भजन गाते पाया गया (प्रेरितों 16:25) और जो रोमी जेल में भी सदा आनन्दित रहो लिख सका। उसे वास्तव में किस बात ने प्रसन्न किया था? उसका अंतिम आनन्द क्या होगा? वे लोग जो उद्धार पाने में उसके साथी है। फिलिप्पी के लोग उसका आनन्द और मुकुट थे (फिलिप्पयों 4:1)। थिस्सलुनीके के लोगों के लिए उसने लिखा, भला हमारी आशा या आनन्द या बड़ाई का मुकुट क्या है? क्या हमारे प्रभु यीशु के सम्मुख उसके आने के समय तुम ही न होगे? हमारी बड़ाई और आनन्द तुम ही हो। (1 थिस्सलुनीकियों 2:19, 20)। पौलुस को यह जानकार आनन्द मिला कि उसके द्वारा लोगों का उद्धार हुआ है और वे विश्वासी बने हुए है।

आनन्द पवित्र आत्मा के फल के रूप में

बाइबली आनन्द उद्धार पाए हुए होने से जुड़ा है, इस कारण यह उपयुक्त है कि आनन्द की बात आत्मा के फल के भाग होने के रूप में की जाए क्यों?

1. क्योंकि हमारा उद्धार पवित्र आत्मा के द्वारा होता है। हमें उद्धार दिलाने में पवित्र आत्मा का बड़ा योगदान है। हम जल और आत्मा के द्वारा नया जन्म पाते हैं (यूहन्ना 3:3,5) और हमारा उद्धार नये जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा होता है (तीतुस 3:5)। यह स्नान तब होता है जब हम पवित्र आत्मा की प्रेरणा से दिए गए वचन की बात को मानते हैं। पिन्तेकुस्त के दिन वाले लोगों की तरह, हम मसीह में विश्वास करे, मन फिराकर बपतिस्मा ले सकते हैं और पापों की क्षमा पा सकते हैं (प्रेरितों 2:38)।

2. क्योंकि उद्धार पाने के समय हमें पवित्र आत्मा मिलता है। उद्धार पाने पर हमें परमेश्वर की आज्ञा मानने के द्वारा (प्रेरितों 5:32) परमेश्वर की संतान होने (गलातियों 4:6) पर आत्मा दिया जाता है। यह तब होता है जब हम मन फिराकर

बपतिस्मा लेते हैं (प्रेरितों 2:38)। मसीही व्यक्ति को उद्धार पाने या धर्मी ठहराए जाने पर पवित्र आत्मा का वास मिलता है।

हमारा उद्धार आत्मा के द्वारा होता है और धर्मी ठहराए जाने पर हमें आत्मा मिलता है। इस कारण केवल यही तर्कसंगत है कि आनन्द जो उद्धार का एक परिणाम है, आत्मा के फल का भाग हो। यह आनन्द जो हमारे धर्मी ठहराये जाने से मिलता है, केवल अच्छा अहसास, हंसते रहना या मुस्कुराते रहना नहीं है। इसके बजाय यह तो वह आनन्द है, जो तब भी बना रहता है, जब परिस्थितियां बिल्कुल विपरीत हों, क्योंकि तब भी हम उद्धार पाए हुए रह सकते हैं।

परिवार में आनन्द

यदि परिवार के सदस्य के रूप में हमारे जीवनों में यह आनन्द है तो हम खुशहाल ही होंगे। धर्मी ठहराए जाने से मिलने वाला आनन्द किसी भी प्रकार अच्छी भावना से गहरा है; यह सुख या संतुष्टि के अनुभव से भी गहरा है। बेहतरी की यह भावना विपरीत परिस्थितियों में खत्म नहीं होती। समृद्धि हमेशा नहीं रहती; दुख और निराशा के समय बेशक आएंगे। यदि हमारा आनन्द सांसारिक सम्पत्ति या सांसारिक मूल्यों पर आधारित है, तो हम पाएंगे कि हमारा आनन्द कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं और चोर सेंध लगाते और चुराते हैं (मत्ती 6:19) सांसारिक चीजें टिकी नहीं रहती। यदि हमारा आनन्द उन पर आधारित है, तो उनके चले जाने पर हमारा घर खुशहाल नहीं रहेगा।

परन्तु यदि हमारा आनन्द आत्मिक आशिषें अर्थात उद्धार और धर्मी ठहराए जाने के अनुभव पर आधारित है तो हमारा आनन्द सदा तक बना रह सकता है। ऐसा आनन्द जीवन को धनवान बनाकर हमारे बोझों को हल्का करता है। त्रासदी के आने पर मसीही व्यक्ति कह सकता है, मुझे दुख है कि ऐसा हुआ है। इसे सहना कठिन है; पर अन्त में इससे कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि मेरे पास उद्धार अभी भी है, मैं अभी भी स्वर्ग में परमेश्वर के साथ अनन्तकाल तक रहूंगा।

ऐसी कोई गारंटी नहीं है कि परिवार के हर सदस्य के धर्मी ठहराए जाने के कारण उसमें कोई मुश्किल नहीं होगी। परन्तु यदि परिवार का हर सदस्य विश्वासी मसीही है, तो विवाह अधिक देर तक रहेगा और घर अधिक खुशहाल होगा, जो मसीही न होने पर नहीं होना था।

आनन्द को बढ़ाना

यह सुनिश्चित करने में सहायता करने के लिए हमें वह आनन्द मिलेगा जो हमारे घरों में धर्मी ठहराए जाने से मिलता है, हम क्या कर सकते हैं?

विश्वासी मसीही बन कर

उस आनन्द को पाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण कदम विश्वासी मसीही बनना हैं इस ताड़ना के दो भाग है (1) मसीही बनें और (2) विश्वास योग्य मसीही बनें। यदि हम ने अपने आपको सही नहीं पाया है तो धर्मी ठहराए जाने के आधार पर अपने घरों में आनन्द पाने की उम्मीद नहीं कर सकते। प्रभु हमारा उद्धार चाहता है और हमें उद्धार देने की राह देखता है; हम चाहे उसकी आज्ञा मानें या न मानें और

फिर उद्धार पाना हमारे ऊपर है।

विश्वासी मसीही से विवाह करके जितना आवश्यक मसीही के साथ विवाह करने का निर्णय है। इस बात पर जोर दिए जाने की अपेक्षा की गई हो सकती है। कुछ धार्मिक गुट इसे जीवन का नियम बना देते हैं कि वे अपने विश्वास के बाहर विवाह नहीं करेंगे। मुस्लिम, यहूदी, कैथोलिक और यहां तक कि कुछ प्रोटेस्टेंट लोगों की भी यही नीति है। किसी को भी जिसका अभी विवाह नहीं हुआ है, हमें मसीही जीवन साथी चुनने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

उनके लिए जो अब मसीही हैं पर अपने मसीही जीवन साथी के साथ विवाह करने के समय मसीही नहीं थे, हम परमेश्वर को धन्यवाद देते है। हम उन विश्वासी मसीही स्त्रियों और पुरुषों के लिए विशेष धन्यवाद देते हैं, जो गैर मसीही साथियों से विवाह करने के बावजूद प्रभु के लिए काम करते जा रहे हैं। कइयों ने अपने बच्चों का पालन-पोषण अपने साथी की किसी सहायता के बिना मसीही बनने के लिए किया है। परन्तु आंकड़ों के अनुसार मसीही व्यक्ति के गैर मसीही से विवाह करने के परिणाम आम तौर पर प्रभु के काम को प्रभावित करते हैं। इसलिए मसीही व्यक्ति के लिए किसी और विश्वासी मसीही के साथ विवाह करना बहुत ही महत्वपूर्ण है।

2 कुरिन्थियों 6:14-16 में कुछ अभिप्राय देखे जा सकते है :

अविश्वासियों के साथ असमान जुए में न जुतो, क्योंकि धार्मिकता और अधर्म का क्या मेल-जोल? या ज्योति और अंधकार की क्या संगति? और मसीह का बलियान के साथ क्या लगाव? या विश्वासी के साथ अविश्वासी का क्या नाता? और मूरतों के साथ परमेश्वर के मन्दिर का क्या संबंध? क्योंकि हम तो जीवते परमेश्वर के मन्दिर हैं; जैसा परमेश्वर ने कहा कि मैं उन में बसूंगा और उनमें चला फिरा करूंगा; और मैं उन का परमेश्वर हूंगा, और वे मेरे लोग होंगे।

सम्भवतया ये आयतें किसी गैर मसीही से विवाह करने को पाप नहीं ठहराती, पर इससे निश्चित रूप में उसे जो गैर मसीही से विवाह करने की सोच रहा है या रही है भविष्य पर सावधानीपूर्वक विचार करना चाहिए।

दूसरों को मसीही बनने के लिए प्रोत्साहित करना

इसके अलावा यह ध्यान रखने के लिए कि परिवार का हर सदस्य मसीही बनें, हमें पूरी कोशिश करनी आवश्यक है। यह ताड़ना विशेष रूप में उन माता-पिता के लिए है, जिन्हें अपने बच्चों को मसीही बनने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। माता-पिता कई बार कहते है, मैं अपने बच्चों को आराधना में ले जाने या उन्हें बपतिस्मा लेने के लिए मजबूर नहीं करता क्योंकि मैं उनके फैसले पर अधिकार नहीं रखना चाहता। क्यों नहीं? हम अपने बच्चों को स्कूल में अच्छे से अच्छा परिणाम देने, खेलों या कला में बेहतरीन प्रदर्शन करने या अच्छी से अच्छी शिक्षा पाने अच्छी नौकरी पाने और जीवन के अन्य हर क्षेत्र में बेहतर करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहते है। हम उन्हें मसीही बनने के लिए प्रोत्साहित करने की कोशिश क्यों न करें? क्या इससे हमारे मूल्यों और हमारी प्राथमिकताओं का पता

नहीं चलता? अपने बच्चों के लिए हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण क्या है? सांसारिक खुशी, सांसारिक समृद्धि या यहां उद्धार के साथ अनन्तकाल के लिए स्वर्ग में। मैं अपने बच्चों को खुश और सांसारिक बातों में उनके लिए बढ़िया से बढ़िया चीजें देना चाहता हूं जो शायद दूसरे न दे सकते हो, पर मैं उन्हें और उनके परिवारों को उद्धार की ओर और स्वर्ग में ले जाना चाहता हूं।

इसके अलावा हम अपने बच्चों पर या उनके बच्चों पर न छोड़ दें। कितना अच्छा होता है जब दादा-दादी या नाना-नानी अपने नाती-पोतों को भलाई के लिए प्रोत्साहित कर सकते है।

परिवार के लोग मसीही बनने के लिए प्रोत्साहित करने का महत्व उन पतियों का पत्नियों पर भी लागू है जिनके साथी मसीही नहीं है। मसीही पत्नी को अपने गैर मसीही पति को मसीह के लिए जीतने की पूरी कोशिश करनी चाहिए (1 पतरस 3:1, 2)। इसी प्रकार मसीही पत्नी को अविश्वासी पति को मसीह के लिए जीतने की कोशिश करनी चाहिए। फिर, उन पर छोड़ देना निर्णायक है। पतियों का पत्नियों ने दशकों तक मसीही न बनने से इंकार किया पर अन्ततः वे मसीह में परिवर्तित हो गए थे।

बेशक हमें अपने प्रिय जनों को प्रभु के लिए जीतने की कोशिश करना आवश्यक है पर अन्त में आज्ञा मानने के लिए अपना मन बनाना परिवार के हर सदस्य की अपनी जिम्मेदारी है। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि परिवार के हर सदस्य को सुसमाचार सुनने, मसीह में विश्वास लाने, अपने पापों से मन फिराने, परमेश्वर के पुत्र के रूप में मसीह में विश्वास का अंगीकार करने, और पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेने का अवसर मिले।

प्रकाशन का विकास

जेम्स ई. प्रीस्ट

हम परमेश्वर को अनादि पिता (परमेश्वर में), विश्व्यापी पिता (सृष्टि में) और चयनात्मक पिता (प्रतिज्ञा/वाचा में) के रूप में देख चुके हैं कि उसकी विश्वव्यापी पिता की भूमिका कैसे चयनात्मक पिता की भूमिका से ऊपर है, और हमने संक्षेप में वर्णन किया था कि उसकी आत्मिक पिता की भूमिका चयनात्मक पिता से ऊपर कैसे है। अब हम आत्मिक पिता के रूप में परमेश्वर के अधिक विस्तृत अध्ययन की ओर लौटते हैं।

बेशक ऐतिहासिक युगों में परमेश्वर की योजना थोड़ा-थोड़ा करके प्रकट की गई, वास्तव में यह इतिहास के मंच पर प्रस्तुत की गई एक महान योजना है। रिले रेस (चौकी दौड़) एक अच्छा उदाहरण है। रिले रेस है तो एक दौड़, परन्तु इसमें प्रत्येक खण्ड में कुछ बढ़ोतरी होती है जिसमें एक धावक टीम के अगले सदस्य को एक डण्डा पकड़ना है। इसी प्रकार, अपने तीनों व्यक्तियों में परमेश्वर अपनी महान योजना के सभी चरणों में शामिल था। हम इस योजना में परमेश्वर पिता की

मुख्य भूमिका पर जोर देते आ रहे हैं, परन्तु यह जोर देने का अर्थ उसकी सम्पूर्णता में परमेश्वर के कार्य को कम करना नहीं है।

हमें परमेश्वर के प्रगतिशील प्रकाशन से अपने अध्ययन में बहुत बड़ी सहायता मिलती है। पुनरुत्थान के विषय को समझने के लिए पहले भी इसने हमारी सहायता की है। स्पष्टत: इसके प्रारंभिक विकास में मृत्यु के पश्चात जीवन के विचार में जरूरी नहीं कि शारीरिक पुनरुत्थान भी शामिल हो। ऐसा उस अनिश्चिता से भी लगता है जो पुरानी नियम में शियोल शब्द के उपयोग में रहती है। परन्तु हम यशायाह और दानिय्येल की भविष्यवाणी की पुस्तकों में, मृतकों की शारीरिक पुनरुत्थान की पुष्टि करते हुए स्पष्ट कथन देख चुके है। यह बढ़ती हुई जागरूकता यशायाह या दानिय्येल के बुद्धिमान होने के कारण नहीं थी। उन्हें तो परमेश्वर के भविष्यवक्ता होने के कारण उसका प्रकाशन मिला था।

परमेश्वर का प्रगतिशील प्रकाशन एक और तरह से होता है जो हमारे अध्ययन के लिए उपर्युक्त है। मूसा को लोगों से परमेश्वर की बातें कहते हुए एक नबी कहने की बात पर ध्यान दे-

तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे मध्य से अर्थात तेरे भाइयों में से मेरे समान एक नबी को उत्पन्न करेगा; तू उसी की सुनना, सो मैं उनके लिए उनके भाइयों के बीच में से तेरे समान एक नबी को उत्पन्न करूंगा, और अपना वचन उसके मुंह में डालूंगा; और जिस-जिस बात की मैं उसे आज्ञा दूंगा वही वह उनको कह सुनाएगा। और जो मनुष्य मेरे उस वचन को जो वह मेरे नाम से कहेगा ग्रहण न करेगा, तो मैं उसका हिसाब उन से लूंगा (व्यवस्थाविवरण 18:15-19)।

अपने संदर्भ में यह शब्द मूसा, यशायाह, यहेजकेल और आमोस जैसे कई सदियों तक रहने वाले अपने सेवकों, भविष्यवक्ताओं द्वारा कहे गए परमेश्वर के अधिकारपूर्ण स्वर को कहा गया लगता है। परन्तु परमेश्वर के प्रगतिशील प्रकाशन से, नये नियम में हम पाते हैं कि इस भविष्यवाणी में एक अतिरिक्त अर्थ था जिसने उचित समय पर दृष्टिगोचर होना था। इस्राएल के पुरुषों के जनसमूह को पतरस ने समझाया था कि मूसा ने यीशु अर्थात मसायाह के अधिकारपूर्ण नबी अर्थात भविष्यवक्ता के उत्पन्न होने की बात कही थी।

बाइबल में मिलने वाले प्रगतिशील प्रकाशन के इन दो उदाहरणों को लेने का हमारे अध्ययन में प्रत्यक्ष लाभ है। पहला, हम देखते है। कि आरंभ से ही परमेश्वर ने हमारे लिए एक योजना बनाई थी। परमेश्वर का यह थोड़ा-थोड़ा करके आवश्यकता के अनुसार निर्णय लेना नहीं था। दूसरा, हम धन्यवाद करते हैं कि हम परमेश्वर की पूरी योजना के अद्‌भुत ढंग से प्रकट होने को देख सकते हैं क्योंकि हम पर यह उसके वचन में प्रकट की गई है।

संसार में यीशु अर्थात मसायाह के आने की बात काफी प्रसिद्ध थी। मूसा ने उसे आधिकारिक व्यक्ति कहा था। मसीह के संबंधित पद पुराने नियम में अक्सर मिलते है। मसायाह शब्द इब्रा, मशायाह यू, ख्रिस्तोस का अर्थ है अभिषिक्त।

भजन लिखने वाले ने परमेश्वर द्वारा इस्राएल के राजा को आनन्द के तेल से अभिषेक करने की बात की थी-

हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन सदा सर्वदा बना रहेगा;
तेरा राजदण्ड न्याय का है।
तूने धर्म से प्रीति और दुष्टता से बैर रखा है।
इस कारण परमेश्वर ने हां तेरे परमेश्वर ने
तुझ को तेरे साथियों से अधिक हर्ष के तेल से
अभिषेक किया है।

(भजन संहिता 45:6, 7)।

प्रगतिशील प्रकाशन के द्वारा, हमें पता चलता है कि यह पद परमेश्वर द्वारा अपने पुत्र को मसायाह के रूप में चुने जाने के संकेत के लिए इस्तेमाल किया गया है (इब्रानियों 1:8, 9)।

पिता ने अपने पुत्र को क्या करने के लिए चुना या अभिषेक किया? इस प्रश्न का उत्तर अब तक के सबसे शानदार वक्तव्यों में से एक है। यूहन्ना 3:16, 17 में, हमें इसका उत्तर मिलता है।

क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा, कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।

1 तीमुथियुस 1:15 में पौलुस ने हमें बताया है कि यह बात सच और हर प्रकार से मानने के योग्य है कि मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिए जगत में आया जिनमें सब से बड़ा मैं हूं।

क्या आपने कभी छुटकारे की परमेश्वर की योजना की जटिलता पर विचार किया है? क्या आप कभी हैरान हुए हैं कि जब मनुष्य ने पाप किया तो उसने उसे खत्म क्यों नहीं कर दिया या उसने मनुष्य को पाप करने से रोका क्यों नहीं? इतने युगों से उसकी योजना को लोग क्यों नहीं मान रहे हैं? यह सुझाव देना उपहासजनक लगता है कि इन प्रश्नों में जिन कठिनाइयों का सुझाव दिया गया है वे परमेश्वर और मनुष्यजाति के स्वभाव के कारण ही उतपन्न हुई है परन्तु है यह सत्य।

आइए परमेश्वर और मनुष्य जाति के संबंध में हुए कुछ बड़े विकासों पर ध्यान देते हैं। परमेश्वर प्रेम करने वाला, पवित्र, धर्मी, अनुग्रह करने वाला और क्षमा करने वाला है। उसकी मानवीय रचना परमेश्वर की तरह ही शुद्ध और पवित्र बनाई गई थी। पुरुष और स्त्री को बनाना परमेश्वर के प्रेम का एक कार्य था, और प्रेम बदले में प्रेम ही मांगता है दबाव से नहीं बल्कि प्रेम के बदले में प्रेम। मनुष्यों द्वारा परमेश्वर के प्रेम को ग्रहण करने के लिए उनके पास एक विकल्प था। वे परमेश्वर की इच्छा से प्रेम करके उसे प्रसन्नतापूर्वक मान सकते थे; वरना उनका संबंध प्रेमपूर्वक या भक्तिवाला नहीं होना था। परमेश्वर की पसंद चुनने के बजाय अपने आपको संतुष्ट करने का निर्णय लेकर उन्होंने गलत किया था। इससे परमेश्वर के पवित्र और पाप रहित होने के कारण परमेश्वर और मनुष्य के बीच संबंध बिगड़ गया था।

अपने प्रेमी स्वभाव के कारण, परमेश्वर उन जुदा होने वालों को प्रेम के परस्पर संबंध में फिर से लाने के लिए स्वयं उनके पास गया। परन्तु इसमें बहुत सी

जटिलताएं थी। परमेश्वर उन्हें पापी होने की स्थिति में ग्रहण नहीं कर सकता था, क्योंकि वह पूर्णतया पवित्र है। पूर्ण शुद्धता का अशुद्धता से कोई मेल नहीं हो सकता। परमेश्वर उनके पापों को ऐसे ही क्षमा नहीं कर सकता था क्योंकि वह पूर्णतया धर्मी है। पाप का दाम चुकाना पड़ता है। न्याय की यही मांग है।

सर्वज्ञ परमेश्वर की बुद्धि बहुत जटिल लगने वाली इस दुविधा के उसके समाधान में देखी जाती है। यह बाइबल के पन्नों को खोलकर हजारों वर्षों तक फैला देती है। अपने अध्ययन में हम उसे विशेष लोगों को बुलाते हुए देख चुके हैं जिनके द्वारा सब जातियों को आशीष मिलनी थी। उन लोगों को मूर्तिपूजा से परमेश्वर की ओर लोटते, उसके प्रेम को परखते और उसे नियमों का उल्लंघन करते देखकर हम अचंभित हुए थे। वह उन्हें अपने भविष्वक्ताओं के द्वारा वापस बुलाता रहा है। उनके द्वारा वह उन्हें मसायाह के आने का स्मरण कराता रहा जिसने सब लोगों को आशीष देनी थी।

परमेश्वर अंतिम समाधान के लिए मार्ग तैयार कर रहा था। यह कोई आसान समाधान नहीं था, परन्तु केवल यही एकमात्र समाधान था जिससे पूर्णतया पवित्र, धर्मी व प्रेमी परमेश्वर के किसी गुण का उल्लंघन नहीं होना था। केवल उसका ही समाधान ऐसा था जिससे मनुष्य शुद्ध अवस्था अर्थात पवित्रता में उससे मेल कर सकते थे।

हम देख चुके हैं कि चयनात्मक पिता के रूप में परमेश्वर ने अपने चुने हुए लोगों को बहुत सी आशिषें देने की बहुमूल्य प्रतिज्ञाएं की थी। भविष्यवाणी की भाषा में उसने एक मसायाह के बारे में बताया जिसने अन्ततः इब्राहीम के वंश में से आना था, जिसके द्वारा सब जातियों को आशीष मिलनी थी। इसलिए यह स्पष्ट है कि अपने साथ मनुष्य जाति को मिलाने के अपने प्रयास में परमेश्वर ने अपने लिए एक और भूमिका की योजना बनाई हुई थी। हम जानते हैं कि सृष्टि की रचना में विश्वव्यापी पिता के रूप में उद्धार के लिए परमेश्वर की भूमिका पर्याप्त नहीं थी, क्योंकि वह उस समय के लिए मार्ग तैयार करने के लिए उन लोगों का चयनात्मक पिता बन गया था। जब सारी मनुष्यजाति को उद्धार की आशिषें उपलब्ध होनी थी। इसलिए न तो विश्वव्यापी पिता के रूप में उसके काम और न ही चयनात्मक पिता के रूप में उसका अंतिम समाधान होना था।

रविवार सुबह के मसीही

जॉन स्टेसी

मसीह के नाम से कहलाने वाले बहुतेरे लोग ऐसे हैं जो हफ्ते में केवल एक ही बार कलीसिया की सभा में उपस्थित होते हैं, यानि रविवार की सुबह को। और ऐसा करके वे अपने आप में बड़ा ही संतोष अनुभव करते हैं। यह दिखाता है, कि शैतान कितनी चालाकी से लोगों को नाकाम बना देता है। मसीही भाईयों को लिखकर पौलुस ने 2 कुरिन्थियों 2:11 में कहा था, कि हम उसकी (शैतान की) युक्तियों

से अनजान नहीं। किन्तु तौभी बहुतेरे लोग शैतान की युक्तियों के शिकार हैं। जो लोग अपने आप को केवल रविवार की सुबह ही मसीही मानते हैं, वे अपने मसीही जीवन में हर प्रकार से असफल रहते हैं, और अपने आप को बहुत सी ऐसी बातों से वंचित कर देते हैं जिनकी सहायता से वे अच्छे मसीही बन सकते है।

रविवार की सुबह के मसीही किन-किन वस्तुओं से वंचित रहते हैं? इस सम्बंध में हम यह देखते हैं कि सबसे पहले, वे अज्ञानता में रहते है। अन्य मसीही भाईयों के साथ मिलकर बाइबल का अध्ययन करने से हम परमेश्वर के वचन के ज्ञान में बढ़ सकते है। हमें अपने उद्धारकर्ता मसीह यीशु के ज्ञान में बढ़ने की आवश्यकता है।

दूसरे, हमें आपसी सहभागिता की आवश्यकता है। यीशु ने मत्ती 18:20 में कहा था कि जहां दो या तीन मेरे नाम पर इक्ट्ठे होते हैं, वहां मैं उनके बीच में होता हूं। उसके लोगों के बीच मैं न होकर हम मसीह की सहभागिता से वंचित रह जाते हैं। जिस प्रकार बच्चे और माता-पिता एक-दूसरे के साथ रहना चाहते हैं, ऐसे ही परमेश्वर के बालकों को भी आपस में एक दूसरे के साथ अपने स्वर्गीय पिता की सहभागिता में इक्ट्ठे रहना चाहिए।

तीसरे, स्थान पर, रविवार की सुबह के मसीही प्रेरणा से वंचित रहते हैं। हमें आत्मिक खुराक की आवश्यकता है। मत्ती 4:4 में यीशु ने कहा था, कि मनुष्य केवल रोटी से ही नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा। एक साथ एकत्रित होकर परमेश्वर की आराधना तथा बाइबल अध्ययन करने से हमें आत्मिक बल मिलता है, जिसके द्वारा हम संसार में एक अच्छा जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

चौथे, ऐसे लोग मसीही आत्मिक उन्माद से वंचित रह जाते है। कई बार हम ऐसे-ऐसे काम करते हैं जिनके विषय में हम जानते हैं कि वे हमें नहीं करने चाहिए। सो आवश्यकता है कि हमें इस बात के लिये प्रेरणा मिले कि हम सही मार्ग पर चलते रहें। इब्रानियों 10:24 में लिखा है और प्रेम और भले कामों में उस्काने के लिये एक दूसरे की चिंता किया करो।

पांचवें स्थान पर, रविवार की सुबह के मसीही आत्मिक उन्नति नहीं कर पाते। पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 14:22 में कहा था, कि तुम्हारे वरदानों की उन्नति से कलीसिया की उन्नति हो। हमारी यह जिम्मेदारी है कि हम अपने अन्य मसीही भाई-बहिनों के लिये उनकी आत्मिक उन्नति का कारण बने।

छठी बात इस संबंध में यह है, कि हमें बचाव की आवश्यकता है। 1 यूहन्ना 5:16 में यूहन्ना कहता है कि सारा संसार उस दुष्ट के वश में पड़ा है। सारा संसार पाप की गिरफ्त में है और कई बार मसीही जीवन निर्वाह करना बड़ा ही कठिन हो जाता है। सो जितना अधिक हम यीशु और उसके लोगों की संगति में रहेंगे उतना ही अधिक हमें पाप से बचने की शक्ति मिलेगी और हम पाप के कैंसर से लड़ सकेंगे।

और, फिर हमें मसीही आनन्द की आवश्यकता है जो मसीह के लोगों की संगति से हमें प्राप्त हो सकता है। केवल रवीवार की सुबह जो लोग एकत्रित होते हैं उन्हें ऐसा आनन्द भरपुर प्राप्त नहीं हो सकता। दाऊद भजन 122:1 में कहता है

कि जब लोगों ने मुझसे कहा कि हम यहोवा के भवन को चले, तब मैं आनन्दित हुआ। यह बड़े ही दुख की बात है कि बहुत से मसीही कहलाने वाले लोग ऐसा सोचते हैं कि सप्ताह में एक बार उपासना में आना उनका कर्तव्य है, और उसके आगे कुछ करने की आवश्यकता नहीं। इब्रानियों की पत्री का लेखक इब्रानियों 10:25 में इस प्रकार कहता है, और एक दूसरे के साथ इक्ट्ठा होना ना छोड़ें जैसे कि कितनों की रीति है।

यीशु मसीह की पवित्रता

जोएल स्टीफ़न विलियम्स

यीशु के ''सिद्ध बनने'' के बारे में बाइबल बताती है (इब्रानियों 5:9)। ''उसमें कोई पाप नहीं है'' (1 यूहन्ना 3:5)। क्योंकि वोह हमारे पापों के लिये एक मेमने की तरह बलिदान हुआ था, इसलिये उसका पापरहित होना आवश्यक था। (यूहन्ना 1:29; इब्रानियों 9:14)। प्रेरित पतरस ने कहा था कि ''उसने कभी कोई पाप नहीं किया था'' (1 पतरस 2:22)। पौलुस प्रेरित के अनुसार, ''परमेश्वर ने उसे हम सबके पापों के बदले में पाप बनाया था (2 कुरि. 5:21)। यीशु, ''हमारी ही तरह सब प्रकार से परखा तो गया था, तौभी उसने कोई पाप नहीं किया था।'' (इब्रानियों 4:15) यीशु ने अपने विरोधियों से भी पूछा था, कि ''किस पाप के लिये तुम मुझे दोषी ठहरा सकते हो?'' (यूहन्ना 8:46)। यीशु मसीह वास्तव में ''पवित्र और धर्मी है।'' (प्रेरितों. 3:14)। यीशु ने क्योंकि कभी भी कोई पाप नहीं किया था इसलिये वोह पाप-रहित था। और उसने पाप इसलिये नहीं किया था क्योंकि वोह पवित्र और धर्मी था। (प्रेरितों. 10:38)।

यीशु के पाप-रहित या दोष-मुक्त होने के प्रमाण अनेक हैं। न केवल उसके मित्रों ने ही उसे निष्पाप माना था, पर जो उसके मित्र नहीं भी थे उन्होंने भी उसे दोष-मुक्त माना था। और सबसे आश्चर्यपूर्ण बात यह है कि जो लोग यीशु के प्रशंसक भी नहीं थे, वे भी उसे दोष-रहित मानते थे। बाइबल के निम्नलिखित हवाले इस बात पर प्रकाश डालते हैं:

1. सहानुभूति रखनेवाले साक्षी

क. पतरस-लूका 5:8; 1 पतरस 1:19; 2:22; 3:18; यूहन्ना 6:69; प्रेरितों. 3:14

ख. पौलुस-2 कुरिन्थियों 5:21

ग. इब्रानियों की पुस्तक का लेखक - इब्रा. 2:10; 4:15; 5:8, 9; 7:26-28; 9:14

घ. स्तिफ़नुस-प्रेरितों 7:52

च. हनन्नयाह-प्रेरितों 22:14

छ. आरम्भ के मसीही लोग-प्रेरितों. 4:30

ज. जिब्राइल स्वर्गदूत-लूका 1:35

2. सहानुभूति न रखनेवाले साक्षी

क. यहूदियों के अगुए-मत्ती 26:55-59; मरकुस 14:48-56; लूका 22:52-53; यूहन्ना 18:20-21

ख. यहूदा-मत्ती 27:4

ग. दुष्टात्माएं-मरकुस 1:24; लूका 4:34

3. सामान्य साक्षी

क. पिलातुस-मत्ती 27:18; 23-24; मरकुस 15:14; लूका 23:4, 14-15, 22, यूहन्ना 18:38; 19:4-6

ख. पिलातुस की पत्नी- मत्ती 27:19

ग. क्रूस पर चढ़ाया गया डाकू-लूका 23:4।

घ. यहूदियों का सरदार-लूका 23:37

4. स्वयं यीशु की साक्षी

क. यूहन्ना 8:46; 14:30; 15:25; 18:23

ख. उसका आज्ञा-पालन-यूहन्ना 4:, 34; 5:30; 6:38;7:18; 8:29, 55; 15:10; 17:4; लूका 22:42; इब्रानियों 10:5-7

इन सभी साक्षियों में स्वयं यीशु की ही साक्षी सबसे प्रमुख मानी जानी चाहिए। क्योंकि जो व्यक्ति जितना अच्छा होगा उतना ही वोह अपनी छोटी सी छोटी गलती पर भी ध्यान देगा। पर जो व्यक्ति बुरा होगा वोह अपनी बड़ी सी बड़ी बुराई को भी छोटी बात समझेगा। यीशु के व्यक्तित्व में झांककर देखने से पता चलता है कि वोह स्वयं जानता था कि उसमें कोई बुराई नहीं है। अपने आप को पाप-रहित बताकर या तो उसने स्वयं को बड़ा अभिमानी प्रमाणित किया था, या उसने वास्तव में सच कहा था। यीशु या तो एक सिरफिरा और झूठा व्यक्ति था, या वोह सचमुच में प्रभु था। सभी अन्य प्रमाण भी यीशु को दोषमुक्त ठहराते हैं। इसीलिये, उसके सभी अनुयायी उसे निष्पाप और पाप-रहित मानते हैं। यीशु का पाप-रहित होना इस कारण से अति आवश्यक था, क्योंकि उसे परमेश्वर ने सारे जगत के पापों का, उसके बलिदान के द्वारा, प्रायश्चित ठहराया था।

बच्चों को सिखाना

सूज़ी फ्रैड्रिक

एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण कार्य जो हम कर सकते हैं वो है अपने बच्चों को परमेश्वर के विषय में सिखाना। यह एक ऐसी जिम्मेवारी है जो माता और पिता दोनों के द्वारा निभाई जानी चाहिये। परन्तु, चाहे कुछ भी हो माता के पास बच्चों को सिखाने के अधिक अवसर होते हैं, क्योंकि घर में वह उनके साथ बहुत समय बिताती हैं। जबकि हम प्रत्येक प्रकार से परमेश्वर की सेवा करते हैं तौभी हमें पूरा प्रयत्न करना चाहिये ताकि अपने सिखाने की योग्यता को हम बढ़ा सकें।

सिखाते समय साधारण शब्दों का प्रयोग करें ताकि बच्चे असानी से समझ सकें। बाइबल की कहानियां पढ़कर उन्हें समझायें। बार-बार उन्हें कहानियां बताईये, जबकि आप सिखाने के लिये अपने आपको तैयार करती हैं। जब आप कहानी को भली-भांति समझ लेंगी तब आप बड़ी अच्छी तरह से बच्चों को समझा सकेगी। आप ऐसे शब्दों को इस्तेमाल कर सकती है जिन्हें बच्चे सरलता से समझ सकें। कहानी बताते समय इस बात का ध्यान रखें कि किसी वास्तविक बात में बदलाव न लाया जाए- अपनी तरफ से किसी ऐसी बात को न जोड़े जो हमें बाइबल में नहीं मिलती।

आज के जो हालात हैं उनकी बाइबल की कहानियों से तुलना कीजिये, यह सिखाने के लिये कि हमारा मसीही व्यावहार कैसा होना चाहिये। उदाहरण के लिये हम देखते हैं कि यीशु के जीवन से जुड़ी हुई ऐसी बहुत सी घटनाएं हैं जो हमें बताती हैं कि यीशु एक बहुत ही सहायता करने वाला व्यक्ति था। प्रेरित पौलूस के जीवन में हम देखते हैं कि उसने कठिन से कठिन समयों में भी उपासना करना नहीं छोड़ा। अदन की बाटिका में आदम ने परमेश्वर से झूठ बोला, परन्तु वह परमेश्वर को धोखा नहीं दे सका, क्योंकि परमेश्वर सब कुछ जानता है। बच्चों को यह सिखाने की आवश्यकता है कि हमारे दैनिक जीवनों में मसीही व्यवहार का होना बहुत आवश्यक है।

जब आपके बच्चे छोटे होते हैं तभी से उन्हें सिखाना आरंभ कीजिये। जो बातें वे अभी सीखेंगे वे उनके जीवन में हमेशा यादगार बन कर रहेगा। अपने बच्चों के साथ अपने पड़ोस के बच्चों को भी सीखने का निमन्त्रण दीजिये ताकि बाद में वे भी प्रभु यीशु की शिक्षा की ओर आकर्षित हो सकें।

कितना अच्छा होगा यदि आपके बच्चे आपको बाइबल का अध्ययन करते हुए देखें। यदि वे देखते हैं कि यह बात आपके लिये बहुत महत्त्व रखती है, तब बड़े होकर वे भी इसे महत्त्व देंगे। इस बात को याद रखिये कि वे आपको हमेशा देख रहे हैं तथा वे आपके कार्यों से और आपके द्वारा बोले गए शब्दों से बहुत कुछ सीखेंगे। आज कितनी मताएं ऐसी हैं जो अपने बच्चों को रविवार (सन्डे) को अराधना में ले जाना कोई आवश्यक नहीं समझती। जब वे उपासना सभा में होती हैं तब उनके बच्चे घर में टी.वी. देख रहें होते हैं। हमें अपने बच्चों को सिखाना है कि वे आत्मिक बातों को पहिला स्थान दें।

किसी भी बच्चे के लिये यह कितनी आशिष की बात होगी कि उसकी माता-एक धार्मिक स्त्री है, क्योंकि वह हमेशा उसे परमेश्वर की बातें याद दिलाती रहेंगी।